अध्याय 33

पुनः स्थापन: परमेश्वर की अपनी उपस्थिति की प्रतिज्ञा

इस्राएल के विश्वासघात (परमेश्वर की आज्ञाओं के उल्लंघन) के बाद (अध्याय 32), लोगों ने एक बार फिर प्रतिज्ञा के देश की ओर कूच करने की तैयारी की। परमेश्वर ने उस देश में जाने की अपनी आज्ञा को फिर से नया किया जिसकी प्रतिज्ञा उसने उनके पूर्वजों से की थी, और उसने उन्हें आश्वासन दिया कि वह उनके सामने से कनानियों को बाहर निकाल देगा। उसने यह भी कहा कि वह उनके साथ इस कारण नहीं जाएगा कहीं ऐसा न हो कि वह इन हठी लोगों को उनकी यात्रा में ही नष्ट कर दे (33:1-3)। इसके बजाय उनके आगे-आगे एक स्वर्गदूत जाएगा। लोग इस घोषणा के कारण दुःख से भर गए थे; परमेश्वर के निवेदन पर उन्होंने अपने गहने उतार दिए (33:4-6)।

परमेश्वर ने उस तम्बू में जो छावनी के बाहर खड़ा किया गया था मूसा के साथ आमने-सामने बात करने के द्वारा लोगों से वार्तालाप करना जारी रखा। जब मूसा तम्बू को छोड़कर जाता, तो यहोशू वहीं ठहरा रहता था (33:7-11)।

मूसा ने परमेश्वर के और अधिक आन्तरिक ज्ञान की खोज की (33:12, 13), और परमेश्वर ने उत्तर दिया कि निस्संदेह परमेश्वर की उपस्थिति इस्राएल के साथ जाएगी (33:14)। मूसा ने इसके बाद परमेश्वर से उसकी उपस्थिति का कुछ प्रमाण माँगा जो इस्राएल को अन्य सभी लोगों से अलग बनाएगा (33:15, 16)। परमेश्वर ने उसकी विनती स्वीकार कर ली (33:17)।

मूसा ने परमेश्वर से प्रार्थना की और कहा कि क्या वह यहोवा के तेज को देख सकता है, और परमेश्वर स्वयं को मूसा को दिखाने के लिए मान गया (33:18, 19)। चूंकि, "कोई मनुष्य परमेश्वर को देख कर जीवित नहीं रह सकता," मूसा को एक चट्टान की दरार में खड़ा होना पड़ेगा, और परमेश्वर वहाँ से गुजरने तक मूसा को ढांके रखेगा। इसके बाद मूसा को परमेश्वर की पीठ देखने की अनुमति मिल जाएगी (33:20-23)।

परमेश्वर का लोगों के पास से चला जाना (33:1-6)

1फिर यहोवा ने मूसा से कहा, "तू उन लोगों को जिन्हें मिस्र देश से छुड़ा लाया

है संग लेकर उस देश को जा, जिसके विषय मैं ने अब्राहम, इसहाक, और याकूब से शपथ खाकर कहा था कि मैं उसे तुम्हारे वंश को दूँगा। 2और मैं तेरे आगे-आगे एक दूत को भेजूँगा, और कनानी, एमोरी, हित्ती, परिज्जी, हिब्बी और यबूसी लोगों को बरबस निकाल दूँगा। 3तुम लोग उस देश को जाओ जिसमें दूध और मधु की धारा बहती है; परन्तु तुम हठीले हो, इस कारण मैं तुम्हारे बीच में हो के न चलूँगा, ऐसा न हो कि मैं मार्ग में तुम्हारा अन्त कर डालूँ।" 4यह बुरा समाचार सुनकर वे लोग विलाप करने लगे; और कोई अपने गहने पहने हुए न रहा। 5क्योंकि यहोवा ने मूसा से कह दिया था, "इस्राएलियों को मेरा यह वचन सुना, 'तुम लोग तो हठीले हो; यदि मैं पल भर के लिये तुम्हारे बीच होकर चलूँ, तो तुम्हारा अन्त कर डालूँगा। इसलिये अब अपने-अपने गहने अपने अंगों से उतार दो कि मैं जानूँ कि तुम्हारे साथ क्या करना चाहिए'।" 6इसलिये इस्राएली होरेब पर्वत से लेकर आगे को अपने गहने उतारे रहे।

आयतें 1, 2. उस विपत्ति के बाद जिसके द्वारा **यहोवा** ने इस्राएल को दण्ड दिया था, उसने **मूसा** को उन **लोगों** की अगुवाई करने के अपने निर्देश स्मरण करवाए जिन्हें वह **मिस्र** से छुड़ाकर प्रतिज्ञा के देश ले जा रहा था। इसके साथ ही, परमेश्वर ने उन्हें एक **स्वर्गदूत** के द्वारा अगुवाई किए जाने, (23:20, 21; 32:34 पर टिप्पणियाँ देखें), और साथ ही साथ इस देश से अन्यजाति लोगों को हटाने में स्वयं सहायता करने का आश्वासन भी दिया। उसने फिर से उन छः जातियों के नाम दिए जिन्हें इस्राएलियों को देश से बाहर निकालना था (38:8 पर टिप्पणियाँ देखें)।

आयत 3. परमेश्वर ने व्याकुल करने वाला समाचार दिया कि, यद्यपि वे **दूध और मधु की धारा बहने वाले एक** उत्तम देश की ओर यात्रा कर रहे थे, परन्तु वह उनके साथ नहीं **जाएगा**। उसने उनके साथ जाने से इसलिए मना कर दिया क्योंकि वे **हठीले लोग** थे और वह उन्हें **मार्ग में ही नाश कर सकता था**।

परमेश्वर की अनुपस्थिति इस्राएल के परमेश्वर से विश्वासघात करने का एक और परिणाम थी। इस्राएल ने स्वयं को "हठी" दिखाया था - ढीठ और बलवा करने वाले लोग जिन्होंने परमेश्वर की आज्ञा का उल्लंघन करने की ठान ली थी (32:9 पर टिप्पणियाँ देखें)। परमेश्वर की अनुपस्थिति, एक प्रकार से इस्राएल के लिए आशीष ही होगी, क्योंकि बलवा करने वाले लोगों में एक पवित्र परमेश्वर की उपस्थिति उन्हें निश्चित तौर पर जोखिम में डालेगी। निश्चित तौर पर, यदि परमेश्वर उनके बीच ठहरा रहता, और वे पाप करते और वह उन्हें नष्ट कर डालता। आर. एलन कोल के अनुसार, "यह अस्वीकृति रक्षात्मक है, यदि यहोवा उस समय इस्राएल के अधिक निकट हो जब वे पाप करें, तो उसका क्रोध भड़क उठेगा और वे मर जाएंगे।"[1]

आयत 4. लोगों ने परमेश्वर के उनके मध्य से चले जाने को एक आशीष की सम्भावना के रूप में नहीं देखा। इसके विपरीत, **वे विलाप करने लगे**, और अपने पश्चाताप का संकेत देने के लिए **अपने** गहने उतारने लगे। इस कार्य का महत्व

सम्भवतः इस तथ्य से और बढ़ जाता है कि कान की बालियों का उपयोग सोने के बछड़े को बनाने के लिए हुआ था और यह कि कई बार वे अन्यजातियों की मूर्तिपूजा से जुड़े हुए होते थे (32:2, 3 पर टिप्पणियाँ देखें)।

आयतें 5, 6. विवरण यह समझाने के लिए वापस आता है कि गहनों को परमेश्वर के आज्ञा देने पर उतारा गया था। **मूसा के** द्वारा **यहोवा** ने **इस्राएल** पर **हठी**, और **बलवा** करने वाले लोग होने का आरोप लगाया था, और उनसे कहा था कि यदि वह उनके साथ जाएगा तो क्या होगा। इसके बाद उसने इस्राएलियों को उनके **गहने उतारने** की आज्ञा दी, और संकेत दिया कि अभी उसने यह निर्णय नहीं किया था कि वह उनके साथ क्या करेगा। इस सम्भावना को सामने पाकर कि परमेश्वर उन्हें नष्ट करने का निर्णय ले सकता है, इस्राएलियों ने **अपने-अपने गहने उतार दिए**। उन्होंने **होरेब पर्वत और उसके आगे तक**, आभूषण पहनने से परहेज किया, जो कि सारे जंगल में उनकी यात्रा थी।

यह आश्वासन कि परमेश्वर स्वयं को प्रकट करेगा (33:7-23)

परमेश्वर ने पहले कैसे स्वयं को प्रकट किया (33:7-11)

7मूसा तम्बू को छावनी से बाहर वरन् दूर खड़ा कराया करता था, और उसको मिलापवाला तम्बू कहता था। और जो कोई यहोवा को ढूँढ़ता वह उस मिलापवाले तम्बू के पास जो छावनी के बाहर था, निकल जाता था। 8जब जब मूसा तम्बू के पास जाता, तब तब सब लोग उठकर अपने अपने डेरे के द्वार पर खड़े हो जाते, और जब तक मूसा उस तम्बू में प्रवेश न करता था तब तक उसकी ओर ताकते रहते थे। 9जब मूसा उस तम्बू में प्रवेश करता था, तब बादल का खम्भा उतर के तम्बू के द्वार पर ठहर जाता था, और यहोवा मूसा से बातें करने लगता था। 10और सब लोग जब बादल के खम्भे को तम्बू के द्वार पर ठहरा देखते थे, तब उठकर अपने अपने डेरे के द्वार पर से दण्डवत् करते थे। 11और यहोवा मूसा से इस प्रकार आमने-सामने बातें करता था, जिस प्रकार कोई अपने भाई से बातें करे। और मूसा तो छावनी में लौट आता था, पर यहोशू नामक एक जवान, जो नून का पुत्र और मूसा का सेवक था, वह तम्बू में से न निकलता था।

आयत 7. यह भाग उस विषय में जानकारी देता है कि **मूसा** को **यहोवा** के साथ कहाँ पर और किस प्रकार बात करनी थी। उसे उस **मिलाप वाले तम्बू** में परमेश्वर से प्रकाशन प्राप्त हुए जो उसने **छावनी के बाहर** खड़ा करवाया था - वास्तव में, **छावनी से उचित दूरी पर।** जो परमेश्वर की इच्छा जानना चाहते थे वे **छावनी के बाहर जाते** और इस तम्बू में उसे ढूँढा करते थे।

"मिलाप वाला तम्बू" इस सन्दर्भ में उसे वह मिलाप वाला तम्बू न समझा जाए जो बाद में बनाया गया था - यहाँ तक कि तब भी जब मिलाप वाले तम्बू का इस नाम से पुस्तक में हर कहीं उल्लेख किया गया है (27:21; 28:43; 29:4;

30:16; 31:7; 35:21; 39:32; 40:2)। इस तम्बू को स्वयं मूसा के द्वारा खड़ा किया गया था, परन्तु मिलाप वाला तम्बू एक व्यक्ति के द्वारा खड़ा किए जाने और उठाकर ले जाने के लिए कहीं बड़ा था। इसके साथ ही, इस तम्बू को खड़ा करने और ले जाने की विशेष जिम्मेदारी लेवियों की थी। यद्यपि इस तम्बू को "छावनी के बाहर" खड़ा किया गया था, मिलाप वाले तम्बू को छावनी के केंद्र में खड़ा किया गया था (गिनती 2:1, 2)। इसके साथ, इस तम्बू का उद्देश्य मिलाप वाले तम्बू से भिन्न था। यहोवा समय-समय पर इस तम्बू में मूसा से मिला करता था, जबकि मिलाप वाला तम्बू एक स्थायी निवास स्थान बनने वाला था। इस तम्बू ने प्रकाशन के एक स्थान का कार्य किया, जबकि मिलाप वाले तम्बू ने मुख्य रूप से बलिदान और आराधना के लिए कार्य किया।

आयत 8. इस्राएली **मूसा** को उस समय विशेष सम्मान दिया करते थे जब वह परमेश्वर से मिलने **तम्बू में जाया करता था**। छावनी के भीतर, **लोग उठकर खड़े होते** और **उसके तम्बू में प्रवेश करने** तक उसे **ताकते** रहते थे। इस प्रकार से, वे ईश्वरीय भेंट के प्रति अपनी भक्ति और आश्चर्य प्रकट किया करते थे।

आयतें 9, 10. वहाँ **यहोवा बादल के खम्भे** में उतर आया और अपने वचन **मूसा** को बताए। निर्गमन में कुछ पहले, "बादल का खम्भे" ने इस्राएलियों का जंगल में मार्ग दर्शन किया और मिस्र की सेना की और से उनकी ढाल बने रहा (13:21, 22; 14:19)। इस बिंदु पर, इसने परमेश्वर का उसके लोगों के अगुवे से भेंट करने का प्रदर्शन किया। जैसे ही परमेश्वर **बादल के खम्भे में होकर** उतरा, **लोगों** ने देखा और प्रत्येक व्यक्ति ने **अपने-अपने डेरे के द्वार** पर खड़े होकर **आराधना की**।

आयत 11. उन दिनों में **यहोवा मूसा से आमने-सामने** बातें किया करता था। यह विवरण उस निकट संपर्क का चित्रण करता है जो मूसा का परमेश्वर के साथ, इस्राएलियों की तुलना में था। यहोवा ने सीनै पर्वत के नीचे इस्राएलियों से "आमने-सामने" बातें की थी, परन्तु इस्राएलियों ने विनती की और कहा कि परमेश्वर स्वयं की बजाय मूसा के द्वारा बातें करे (व्यव. 5:4, 23-27)। जो प्रत्यक्ष संपर्क परमेश्वर का मूसा के साथ था वह उस प्रकाशन के विपरीत था जो उसने अन्य भविष्यद्वक्ताओं को स्वप्नों और दर्शनों में दिया था: "परन्तु मेरा दास मूसा ऐसा नहीं है; वह तो मेरे सब घरानों में विश्वासयोग्य है। उस से मैं गुप्त रीति से नहीं, परन्तु आमने-सामने और प्रत्यक्ष होकर बातें करता हूँ; और वह यहोवा का स्वरूप निहारने पाता है। इसलिये तुम मेरे दास मूसा की निन्दा करते हुए क्यों नहीं डरे?" (गिनती 12:7, 8; देखें व्यव. 34:10)।

यह वाक्य कि **जिस प्रकार कोई अपने मित्र से बातें करें** आगे मूसा और परमेश्वर के मध्य एक निकट सम्बन्ध का चित्रण करता है। विश्वास के अन्य महान पुरुष जैसे कि हनोक और नूह का "परमेश्वर के साथ चलने" का विवरण किया गया है (उत्पत्ति 5:22, 24; 6:9)। इससे भी बढ़कर, अब्राहम को "परमेश्वर का मित्र" कहा जाता था (याकूब 2:23; देखें 2 इतिहास 20:7; यशा. 41:8)।

जब **मूसा** वहाँ नहीं होता था तो **यहोशू** तम्बू की देखभाल किया करता था। जॉन आई. डरहम ने संकेत किया कि तम्बू में यहोशू की उपस्थिति को "याहवेह के

सामने एक मध्यस्थ के कार्य" के रूप में नहीं समझा जाना चाहिए, बल्कि इसके विपरीत "तम्बू में उसकी भूमिका एक पहरेदार की थी।"[2] यहोशू को मूसा का **सेवक** और एक **जवान पुरुष** कहा गया है (देखें 17:9-14; 24:13; 32:17)।

33:7-11 में "मिलाप वाले तम्बू" का विवरण आसपास के सन्दर्भ से किस प्रकार सम्बन्धित है? इसकी कम से कम दो सम्भावनाएं हैं। एक सम्भावना यह है कि यह वाक्यांश प्रारम्भिक है।[3] यह शब्द किसी घटना का विवरण हो सकता है जो निरंतर होती रहती थी, परन्तु यह आवश्यक नहीं है 33:1-6 में घटनाओं के ठीक बाद इसका ब्यौरा दिया गया हो। यदि ऐसा है, तो कहानी इस विवरण के लिए ठहरती है कि यहोवा ने जंगल में अपनी इच्छा को इस्राएल को किस प्रकार बताया था। हालाँकि पिछली तीन आयतों में, परमेश्वर ने इस्राएल से अपनी उपस्थिति हटा लेने की चेतावनी दी थी, वह चेतावनी कभी पूरी नहीं हुई। परमेश्वर, आने वाले दिनों और महीनों में, तम्बू में उपस्थित था। मूसा उससे वहाँ मिला करता था और लोगों को तम्बू के ऊपर बादल देखने के द्वारा परमेश्वर की उपस्थिति को देखने का सौभाग्य मिला हुआ था। इस वाक्यांश और इसके बाद के वाक्यांश का विषय, परमेश्वर की उसके लोगों में उपस्थिति है।

यदि इस अनुच्छेद का यह अनुवाद सही है, तो सम्भवतः इस "मिलाप वाले तम्बू" को उस स्थान के रूप में देखना उचित होगा जहाँ इस्राएल (विशेषतः मूसा) मिलाप वाले तम्बू के निर्माण के पूरे होने तक परमेश्वर से मिला करता था,[4] सोने के बछड़े की घटना के कुछ महीनों बाद तक। इसके बाद मिलाप वाले तम्बू के अधीन वे कार्य आ गये जो इस तम्बू में किए जाते थे।

यह ब्यौरा एक और सम्भावित तरीके से सन्दर्भ से जुड़ता है कि मूसा ने "उसका" तम्बू "छावनी के बाहर" खड़ा कराया था क्योंकि छावनी लोगों के पाप से दूषित हो चुकी थी। सेप्टुजिंट, "तम्बू" का सन्दर्भ देने के बजाय, कहता है "उसका," जो संकेत करता है कि जो तम्बू मूसा ने छावनी के बाहर खड़ा करवाया था वह उसका अपना तम्बू था।

परमेश्वर ने इस्राएलियों के पाप के कारण छावनी से अपनी उपस्थिति को हटा लिया था। इस मामले में, "मिलाप वाले इस तम्बू" को खड़ा करना सम्भवतः लोगों के पाप के बावजूद परमेश्वर के साथ सम्पर्क बनाए रखने के लिए मूसा की बुद्धिमता पूर्ण और धार्मिक युक्ति थी। गिस्पेन ने व्याख्या की,

> इस क्षण पर केवल मूसा ही वह व्यक्ति था जिसके साथ यहोवा की सहभागिता थी। इस तम्बू के माध्यम से, मूसा यहोवा को उसके संकल्प पर वापस लाने, और उसके साथ और उसके माध्यम से उसके लोगों से उसका मिलना जारी रखने का प्रयास कर रहा था। यह एक मध्यस्थ के योग्य एक पहल है! और इस कारण यह तम्बू, यहोवा और उसके लोगों के बिछड़ने को ध्यान में रखते हुए ... लोगों के लिए शोक करने पर आधारित, एक देखने योग्य प्रार्थना है (आयतें 4, 6)। इस तम्बू को केवल अपने लिए छावनी के बाहर खड़ा करना मूसा के द्वारा उस बात को समझने का प्रमाण है जो यहोवा ने कहा था (आयतें 1-3, 5): यहोवा और इस्राएल के बीच का मामला अभी भी इस्राएल के पक्ष में तय नहीं हुआ था।[5]

यदि यह व्याख्या सही है, तो मिलापवाले तम्बू के निर्माण के पूरे होने और उसके खड़े किए जाने ने उस दूषण के अन्त का संकेत दिया। परमेश्वर की महिमा के तम्बू के ऊपर उतर आने ने (40:34, 35) यह प्रचार किया कि परमेश्वर एक बार फिर से अपने लोगों के बीच में उपस्थित रहेगा; उन्हें अब उससे मिलने लिए "छावनी के बाहर" और अधिक नहीं जाना पड़ेगा।

परमेश्वर किस प्रकार स्वयं को प्रकट करेगा (33:12-23)

12मूसा ने यहोवा से कहा, "सुन तू मुझ से कहता है, 'इन लोगों को ले चल;' परन्तु यह नहीं बताया कि तू मेरे संग किसको भेजेगा। तौभी तू ने कहा है, 'तेरा नाम मेरे चित्त में बसा है, तुझ पर मेरे अनुग्रह की दृष्टि है।' 13और अब यदि मुझ पर तेरे अनुग्रह की दृष्टि हो, तो मुझे अपनी गति समझा दे, जिससे जब मैं तेरा ज्ञान पाऊँ तब तेरे अनुग्रह की दृष्टि मुझ पर बनी रहे। फिर यह भी ध्यान रख कि यह जाति तेरी प्रजा है।" 14यहोवा ने कहा, "मैं आप तेरे साथ चलूँगा और तुझे विश्राम दूँगा।" 15उसने उससे कहा, "यदि तू आप न चले, तो हमें यहाँ से आगे न ले जा। 16यह कैसे जाना जाए कि तेरे अनुग्रह की दृष्टि मुझ पर और अपनी प्रजा पर है? क्या इससे नहीं कि तू हमारे संग-संग चले, जिससे मैं और तेरी प्रजा के लोग पृथ्वी भर के सब लोगों से अलग ठहरें?" 17यहोवा ने मूसा से कहा, "मैं यह काम भी, जिसकी चर्चा तू ने की है, करूँगा; क्योंकि मेरे अनुग्रह की दृष्टि तुझ पर है, और तेरा नाम मेरे चित्त में बसा है।" 18मूसा ने कहा, "मुझे अपना तेज दिखा दे।" 19उसने कहा, "मैं तेरे सम्मुख होकर चलते हुए तुझे अपनी सारी भलाई दिखाऊँगा और तेरे सम्मुख यहोवा नाम का प्रचार करूँगा; और जिस पर मैं अनुग्रह करना चाहूँ उसी पर अनुग्रह करूँगा, और जिस पर दया करना चाहूँ उसी पर दया करूँगा।" 20फिर उसने कहा, "तू मेरे मुख का दर्शन नहीं कर सकता; क्योंकि मनुष्य मेरे मुख का दर्शन करके जीवित नहीं रह सकता।" 21फिर यहोवा ने कहा, "सुन, मेरे पास एक स्थान है, यहाँ तू उस चट्टान पर खड़ा हो; 22और जब तक मेरा तेज तेरे सामने हो के चलता रहे, तब तक मैं तुझे चट्टान की दरार में रखूँगा और जब तक मैं तेरे सामने से होकर न निकल जाऊँ तब तक अपने हाथ से तुझे ढाँपे रहूँगा; 23फिर मैं अपना हाथ उठा लूँगा, तब तू मेरी पीठ का तो दर्शन पाएगा; परन्तु मेरे मुख का दर्शन नहीं मिलेगा।"

गहनों और मिलाप वाले तम्बू की इस चर्चा के बाद, वर्णन फिर से आरम्भ हो जाता है। आयत 12 मूसा और यहोवा के बीच में एक विस्तृत वार्तालाप के साथ उस कहानी को आगे बढ़ाती है जो आयत 3 पर छूट गई थी। मूसा तीन बार बोला (33:12, 13, 15, 16, 18), और यहोवा ने उसे तीन बार उत्तर दिया (33:14, 17, 19-23)। यदि अध्याय के आरम्भ में यहोवा के वचनों को गिना जाए (33:1-3), तो वार्तालाप को आरम्भ और समाप्त करते हुए, यहोवा ने चार बार बात की।

आयतें 12, 13. यहोवा ने मूसा को बताया था, "तू ... उस देश को जा, जिसके

विषय मैं ने अब्राहम, इसहाक, और याकूब से शपथ खाकर कहा था कि मैं उसे तुम्हारे वंश को दूँगा" (33:1)। इस बिंदु पर, मूसा ने कई प्रार्थनाओं सहित उत्तर दिया।

पहले, **मूसा** ने इस आशय के द्वारा विनती की और कहा कि जब वह लोगों को कनान लेकर जाए तो कोई उसके साथ जाए। उसकी विनती एक शिकायत के समान सुनाई पड़ती है। उसने परमेश्वर से कहा, **"तू मुझ से कहता है, 'इन लोगों को ले चल!' परन्तु यह नहीं बताया कि मेरे संग किसको भेजेगा।"** सम्भवतः, यहाँ पर जो विनती सूचित की गई है वह परमेश्वर के उसके लोगों से अपनी उपस्थिति को न हटाने की थी।

दूसरा, मूसा ने परमेश्वर के अधिक आन्तरिक ज्ञान की प्रार्थना की। उसने परमेश्वर के वचनों का उद्धरण दिया, **"तेरा नाम मेरे चित्त में बसा है"** और इसके बाद विनती की, **"मुझे अपनी गति समझा दे, जिससे मैं तेरा ज्ञान पाऊँ"** मूसा ने वास्तव में कहा था "यदि मेरे विषय में तू यह महसूस करता है, तो तुझे मुझपर स्वयं को और अधिक प्रकट करना चाहिए।" उसे आशा थी, कि इसके परिणाम स्वरूप, वह परमेश्वर को और अधिक प्रसन्न कर सकेगा।

सम्भवतः एक तीसरी प्रार्थना मूसा के शब्दों में निहित थी: **"यह भी ध्यान रख, कि यह जाति तेरी प्रजा है।"** शायद मूसा परमेश्वर को प्रतिज्ञा के देश की यात्रा के दौरान उनके बीच में न होने की अपनी उस चेतावनी पर फिर से विचार करने के लिए कह रहा था। मूसा ने अस्पष्ट तौर पर दो कारणों के सुझाव दिए: (1) परमेश्वर के बिना, इस्राएल नष्ट हो जाएगा और (2) चूंकि इस्राएली परमेश्वर के लोग थे, तो वह उन्हें भटकते हुए नहीं देखना चाहेगा।

आयत 14. इस बिंदु पर परमेश्वर का उत्तर छोटा था: **"मैं आप तेरे साथ चलूँगा, और तुझे विश्राम दूंगा।"** दूसरे शब्दों में, परमेश्वर उसकी उपस्थिति को हटाने की अपनी चेतावनी को रद्द कर रहा था (33:3)। यहोवा इस्राएल के साथ उसी प्रकार रहेगा जिस प्रकार वह मिस्र से उनके छुटकारे के समय से रहा था। इसके साथ ही, वह उन्हें उस देश में ले जाएगा जिसमें वे जा रहे थे और वहाँ पर वह उन्हें "विश्राम" देगा। यह शब्द उस देश में एक मीरास, और इसी के साथ ही उनके शत्रुओं से सुरक्षा का सन्दर्भ देता है (व्यव. 12:10; 25:19; यहोशू 11:23; 21:44)।

आयत 15. मूसा ने परमेश्वर के कथन की पुष्टि की। यहोवा की **उपस्थिति** के बिना, इस्राएल वहीं रह सकता था जहाँ पर वे थे - और यह भी कि वे मिस्र में भी रह सकते थे। परमेश्वर के निर्देशों, बुद्धि, और सुरक्षा के बिना, इस्राएल सफल नहीं हो सकता था (देखें भजन 124)।

आयत 16. हालाँकि, मूसा ने एक और आवश्यकता अनुभव की: परमेश्वर की उपस्थिति का प्रमाण। उसने तर्क दिया कि अन्य लोगों के यह जानने के लिए वे अब भी परमेश्वर के अनुग्रह में थे उसे **उनके साथ जाना** होगा। वास्तव में उसकी उपस्थिति, इस्राएल को **पृथ्वी पर रहने वाले सभी लोगों से** अलग करेगी। यह अनोखा कथन इस्राएल के व्यवस्था के अधीन होने की अनोखी स्थिति की पुष्टि

करता है। मूसा केवल परमेश्वर से उसकी दृष्टि में उसके और इस्राएल के विशेष महत्व का आश्वासन नहीं चाहता था, बल्कि वह उस महत्व का अखंडनीय प्रमाण भी चाहता था।

आयत 17. परमेश्वर ने मूसा और इस्राएल के विशेष दर्जे के लिए प्रमाण देने की अपनी इच्छा का संकेत दिया क्योंकि मूसा **ने परमेश्वर की दृष्टि में अनुग्रह पाया था और वह उसे नाम से जानता था**। NASB के अनुसार, यह आयत एक नया अनुच्छेद आरम्भ करती है। हालाँकि, आयत 17 का विचार 16वीं आयत में जो कहा गया था उसका अनुसरण करता है और यह कि अन्य संस्करण (REB; NAB; NJB) अनुच्छेद को 17वीं आयत के साथ समाप्त करते हैं। NIV प्रत्येक अनुच्छेद को एक नए वक्ता के साथ आरम्भ करने के द्वारा सम्भवतः सबसे उत्तम प्रकार से शब्द के वार्तालाप रूप को प्रस्तुत करती है।

आयत 18. इस भाग में वार्तालाप प्रत्येक कथन का निर्माण पहले कही गई बातों पर करने के द्वारा, शीघ्रता से एक वक्ता से दूसरे वक्ता की ओर चला जाता है। यह दृश्य इस अनुच्छेद में इसके उत्कर्ष तक पहुँचता है, जहाँ **मूसा** ने विशेष तौर पर कहा कि उसे क्या चाहिए था: **"मुझे अपना तेज दिखा दे।"** यदि मूसा परमेश्वर का तेज देख सकेगा, तो उसे परमेश्वर का और अधिक आन्तरिक ज्ञान मिल जाएगा। उसे यह आश्वासन भी मिल जाएगा कि परमेश्वर उनके साथ जाएगा, और यह कि इस्राएल जीवित रहेगा, और यह कि सभी उसके (और इस्राएल) के परमेश्वर की दृष्टि में विशेष दर्जे को जान जाएंगे। यह विनती ढीठता से घिरी थी।

आयत 19. परमेश्वर अनुग्रहपूर्वक उस बात के लिए सहमत हो गया जो मूसा ने मांगी थी। यहोवा ने कहा कि **वह अपनी सारी भलाई को** मूसा **के सामने चलते हुए दिखाएगा**। उसने यह भी कहा कि वह मूसा के सामने **यहोवा के नाम का प्रचार करेगा**। "परमेश्वर के नाम का प्रचार करना" मात्र उसके नाम की घोषणा करना नहीं है, बल्कि उसके व्यक्तित्व का वर्णन करना है; उसके नाम का प्रकाशन उसके स्वभाव का प्रकाशन है। पुराने नियम में, एक व्यक्ति का "नाम" उस व्यक्ति का पर्यायवाची था। इसी कारण "यहोवा का नाम" "यहोवा" के बराबर था।

आगे, मूसा को इस बात की पूर्वालोकन दिया गया कि उसके नाम का अर्थ क्या था: इसमें एक कथन सम्मिलित होगा कि यहोवा जिस पर भी दया दिखाना चाहे वह उस पर **अनुग्रह** करेगा और **दया दिखाएगा** (देखें रोमियों 9:15)। जब यहोवा ने स्वयं को मूसा पर 34:6, 7 में प्रकट किया, तो उसने और अधिक सम्पूर्णता से अपने स्वभाव की घोषणा की, विशेषतः यह उसके "अनुग्रहकारी" और "दयालु" होने की घोषणा की।

आयत 20. परमेश्वर के मन में मूसा के लिए जो अद्भुत प्रकाशन था उसके लिए मूसा के मार्ग में एक बाधा बनी रही। परमेश्वर ने कहा, **"तू मेरे मुख का दर्शन नहीं कर सकता, क्योंकि कोई मनुष्य मेरे मुख का दर्शन करके जीवित नहीं रह सकता।"** आयत 11 और इस कथन के मध्य में कोई विरोधाभास नहीं है, जहाँ पर शब्द कहता है कि परमेश्वर मूसा से "आमने-सामने बातें" किया करता था, "जिस प्रकार कोई अपने भाई से बातें करे।" आयत 11 का अर्थ है कि परमेश्वर मूसा से

अन्य किसी मनुष्य की तुलना में अधिक स्वतंत्रता पूर्वक बातें किया करता था; यह इस बात का संकेत नहीं करता कि मूसा ने वास्तव में परमेश्वर को उस रूप में "देखा" था जैसा वह है। रोचक तौर पर, जिन लोगों के विषय में यह कहा गया कि उन्होंने परमेश्वर को देखा था उन्होंने केवल परमेश्वर से सम्बन्धित कोई वस्तु देखी थी: मूसा ने उसकी पीठ देखी उसका मुँह नहीं (33:23); इस्राएल के पुरनियों ने उसके पाँवों के नीचे की चौकी देखी थी (24:10); यशायाह ने "उसके वस्त्र के छोर से मन्दिर को भरते हुए देखा था" (यशा. 6:1)।

आयतें 21-23. यदि परमेश्वर इतना पवित्र है कि कोई मनुष्य उसे देख कर जीवित नहीं रह सकता, तो वह किस प्रकार उस विनती को पूरा कर सकता था जो मूसा ने की थी? **यहोवा ने** एक उपाय दिया: वह मूसा को एक **चट्टान की दरार में रखेगा** और **वहाँ से गुजरते हुए वह** उसे अपने **हाथ से** ढांपे रहेगा। इसके बाद वह जब वहाँ से गुजर चुका होगा तो **अपना हाथ हटा लेगा**, ताकि मूसा को उसकी पीठ दिखाई पड़ सके उसका **मुँह** नहीं। कोल ने लिखा, "उज्ज्वल चित्रात्मक भाषा में, यह वाक्यांश कहता है कि मनुष्य केवल वह स्थान देख सकता है जहाँ से होकर परमेश्वर गुजरा है (22, 23) और उसके बाद के कर्मों और कार्यों के द्वारा उसे जान सकता है।"[6]

स्पष्ट तौर पर, परमेश्वर मानवीय शब्दावलियों में बात कर रहा था। मानव रूप में कोई भी प्राणी एक ही समय पर मूसा को अपने हाथ से ढंके हुए वहाँ से नहीं गुजर सकता था। फिर भी, मूसा को एक निकट, और निजी तौर पर परमेश्वर को देखने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था, जैसा कि सम्भवतः आदम और हव्वा के बाद किसी मनुष्य ने नहीं देखा था। परमेश्वर के उसके ऊपर प्रकट होने के और वाचा को नया करने के बाद मूसा के यहोवा के साथ निकट सम्बन्ध ने उसका रूप बदल दिया: "उसके चेहरे की त्वचा परमेश्वर के साथ उसके बात करने के कारण चमक रही थी" (34:29)।

अनुप्रयोग

परमेश्वर की अनुपस्थिति और इस्राएल की चिंता (अध्याय 33)

निर्गमन 33 एक रोमांच से भरी हुई कहानी बताता है। इस्राएल ने एक मूर्ति बनाने और उसकी उपासना करने के द्वारा पाप किया था। परमेश्वर ने लोगों को नष्ट करने के विषय में अपना मन बदला, परन्तु उसने उन्हें दंड दिया (अध्याय 32)। इस्राएल का भविष्य अनिश्चित बना रहा। उनकी नियति तीन प्रश्नों के उत्तर पर टिकी हुई थी।

क्या इस्राएल को अब भी प्रतिज्ञा के देश में प्रवेश करने की अनुमति मिलेगी? उस समय से लेकर जब परमेश्वर ने सबसे पहले इस्राएल को छुड़ाने की योजनाएँ बनाईं थीं, उसकी मंशा उन्हें उस देश में ले जाने की थी जिसकी प्रतिज्ञा उसने उनके पितरों से की थी। वह उन्हें केवल मिस्र *से* छुड़ा ही नहीं रहा था, बल्कि वह उन्हें प्रतिज्ञा के देश *में* भी लेकर जा रहा था। इस्राएलियों ने, अपने पाप के द्वारा, वाचा

को तोड़ दिया था और कनान के उनके अधिकार को छिनवा लिया था। क्या परमेश्वर उस देश को क्षमा करेगा और उन्हें उस देश में जाने की अनुमति देगा?

उनके बलवे के बावजूद, परमेश्वर ने मूसा को बताया कि वह अब भी इस्राएलियों को उस देश में प्रवेश करने देगा (33:1-3)। वह "एक स्वर्गदूत" को उनके आगे भेजेगा, और वह उस देश के वासियों को उनके सामने से बाहर निकाल देगा।

क्या परमेश्वर मार्ग में इस्राएल के साथ होगा? जिस समय परमेश्वर ने इस्राएल को देश में लेकर जाने की प्रतिज्ञा की, उसी क्षण उसने यह भी कहा कि वह उनके मध्य में नहीं होगा (33:3)। एक भाव, से उसकी अनुपस्थिति, उनकी भलाई के लिए ही थी: "मैं तुम्हारे बीच में होकर न चलूँगा, ऐसा न हो कि मैं मार्ग में तुम्हारा अन्त कर डालूँ।" उनके पापी होने के कारण, यदि परमेश्वर उनके मध्य में रहता, तो वह उन्हें नष्ट करने के लिए बाध्य हो जाता। इसी कारण, उनकी सुरक्षा के लिए, वह "उनके मध्य" में बना नहीं रहेगा।

इस्राएलियों के लिए चेतावनी भरे शब्द थे। वे "विलाप करने लगे, और कोई भी अपने गहने पहने हुए न रहा" (33:4)। मूसा ने परमेश्वर से उसके और लोगों के साथ रहने की विनती की। वह यह जानना चाहता था कि परमेश्वर किसे उनके साथ भेजेगा। वह परमेश्वर के मार्गों को जानना चाहता था और उसकी दृष्टि में अनुग्रह पाना चाहता था। मूसा ने परमेश्वर को यह बताया कि वह उसकी उपस्थिति का अभिलाषी था। उसने परमेश्वर से विनती कि और कहा कि वह अपने लोगों के साथ बना रहे (33:12, 13)।

परमेश्वर ने कहा कि उसकी उपस्थिति इस्राएल के साथ जाएगी (33:14)। मूसा ने उत्तर दिया, "यदि तू आप न चले तो, हमें यहाँ से आगे न ले जा।" मूसा कह रहा था, कि "यदि तू हमारे साथ नहीं जा रहा, तो हमारे लिए न जाना ही भला रहेगा!" मूसा ने यह स्पष्ट कर दिया कि हमारी पहली प्राथमिकता परमेश्वर के साथ रहना और उसका हमारे साथ होना है।

क्या यह परमेश्वर की आवश्यकता होने का एक शक्तिशाली कथन नहीं है? हम गाते हैं, "यीशु के साथ हम सुरक्षित तौर पर कहीं भी जा सकते हैं।"[7] यदि मूसा आज जीवित होता, तो वह कहता, "प्रभु के *बिना*, मैं कहीं भी *नहीं जाऊँगा।"* इस विचार को यह कहने के द्वारा लागू कर सकते हैं, कि "यदि यीशु इस यात्रा [या इस कार्य] में मेरे साथ नहीं जा सकता, तो मैं नहीं जाऊँगा।" उसकी उपस्थिति महत्वपूर्ण है।

इस्राएल यह कैसे जान सकता है कि परमेश्वर उनके साथ रहेगा? मूसा ने विनती की और कहा कि यहोवा उसकी स्वीकृति के चिन्ह के रूप में अपने लोगों के साथ चले, और उसे अपना तेज देखने की अनुमति दे (33:18)। परमेश्वर ने मूसा की साहसी विनती का उत्तर अनुग्रहकारी तरीके से यह कहकर दिया, "मैं ... तेरे सामने यहोवा के नाम का प्रचार करूँगा।" हालाँकि वह मूसा को उसका चेहरा देखने की अनुमति नहीं दे सकता था, वह मूसा को अपनी पीठ दिखाने के लिए सहमत हो गया (33:19-23)। परमेश्वर ने वास्तव में मूसा को उसकी उपस्थिति

का प्रमाण दिया।

जैसे-जैसे मसीही अपना जीवन जीते हैं, हम सोच सकते हैं, "हम किस प्रकार यह जान सकते हैं कि परमेश्वर हमारे साथ है?" परमेश्वर हमारे सामने उस प्रकार प्रकट नहीं होता जैसा वह मूसा के सामने हुआ था। फिर भी, वह हमें अपनी उपस्थिति के भरपूर प्रमाण देता है। हमारे पास संसार की सृष्टि का प्रमाण है और प्रार्थनाओं के उत्तर का प्रमाण है। हमारे पास यह प्रमाण है कि उसकी सुरक्षा हमारे जीवनों में कार्य कर रही है। हमारे पास परमेश्वर का वचन बाइबल है, जिसमें उसने कहा है, "मैं तुझे कभी न छोड़ूँगा, और न कभी तुझे त्यागूँगा" (इब्रा. 13:5)। परमेश्वर सदैव विश्वास योग्य है (1 कुरि. 10:13), और वह सदैव अपने वादों को पूरा करता है।

हम यह स्मरण रख सकते हैं, कि जब हम बहुत छोटे थे, तो हमारे माता-पिता का हमारे निकट रहना कितना आवश्यक था। जब एक अभिभावक कमरे से बाहर जाता, तो अभिभावक के लौटने तक "हमें अलग होने की चिंता" का अनुभव होता था। परमेश्वर के एक बालक होने के नाते, हमें तब "अलग होने की चिंता" का अनुभव करना पड़ता है, जब हम पाप के द्वारा प्रभु से दूर हो जाते हैं (यशा. 59:1, 2)। यदि हमारे साथ यह हुआ है तो हमें प्रभु और हमारे बीच की दूरी को कम करने के लिए कदम उठाने चाहिए। हम घर में उस प्रकार आ सकते हैं जिस प्रकार लूका 15 में उड़ाऊ पुत्र ने किया था, और परमेश्वर हमसे मिलने के लिए दौड़ पड़ेगा।

मनुष्य की सबसे बड़ी अभिलाषा और सबसे बड़ी आवश्यकता: परमेश्वर को जानना और परमेश्वर का उससे परिचित होना (33:12-17)

मनुष्यों में सदैव परमेश्वर को जानने की अभिलाषा रही है, फिर भी जो लोग अलौकिक क्षेत्र से संपर्क साधने का प्रयास करते हैं वे प्रायः एक मात्र सच्चे परमेश्वर को अस्वीकार कर देते हैं। यह अनुच्छेद परमेश्वर को जानने के ऊपर केन्द्रित है। (1) परमेश्वर मनुष्य को जानता है (33:12, 17) । (2) मनुष्य को परमेश्वर को जानने की आवश्यकता है (33:13)। जब कोई यह कह सकता है कि वह परमेश्वर के मार्गों को जानता है, तो इसके बाद वह यह कह सकता है कि वह परमेश्वर को जानता है; जब वह परमेश्वर को जानता है, तब वह परमेश्वर की दृष्टि में "अनुग्रह प्राप्त" कर सकता है। (3) परमेश्वर मनुष्य के लिए उसे जानना सम्भव बनाता है (33:13, 17)। (4) जब लोग परमेश्वर को "जानते" हैं, तो वे उसके साथ एक सम्बन्ध रखते हैं, तो यह स्पष्ट करता है कि वे उसके द्वारा जाने गए हैं; वे उसके लोग बन जाते हैं, "जो अन्य लोगों से भिन्न होते हैं" (33:16)। जब परमेश्वर के लोग परमेश्वर को जानते हैं और वे परमेश्वर के द्वारा जाने जाते हैं, तो वे अपने चारों ओर के संसार से स्पष्ट तौर पर भिन्न होते हैं।

समाप्ति नोट्स

[1]आर. एलन कोल, *एक्सोडस: एन इंट्रोडक्शन एंड कमेंट्री,* टिन्डेल ओल्ड टेस्टामेंट कमेंट्रीज़ (डाउनर्स ग्रोव, इल्ल.: इन्टर-वर्सिटी-प्रेस, 1973), 222. [2]जॉन आई. डरहम, *एक्सोडस,* वर्ड बिब्लिकल कमेन्ट्री, वॉल्यूम 3 (वाको, टेक्स.: वर्ड बुक्स, 1987), 443. [3]एच. गिस्पेन ने टिप्पणी की और कहा कि ये आयतें प्रारम्भिक हो सकती हैं, जो किसी ऐसी बात का सन्दर्भ हो सकती हैं जिसे "मूसा ने बार-बार किया था (NIV)।" "हालाँकि, उन्होंने इस दृष्टिकोण का समर्थन किया कि ये आयतें 1-6 "के आयतों में वर्णित घटनाएँ मूसा ने जो किया उसका सन्दर्भ थीं" (डब्ल्यू. एच. गिस्पेन, *एक्सोडस,* ट्रांस. एड वैन डर मास, बाइबल स्टूडेंटस कमेन्ट्री [ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: रीजेंसी लाइब्रेरी, जोंडरवैन पब्लिशिंग हाउस, 1982], 305-7.) [4]वाल्टर सी. कैसर, जूनियर., "एक्सोडस," इन *द एक्स्पोसिटर्स बाइबल कमेन्ट्री,* वॉल्यूम 2, जेनेसिस-नंबर्स (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: जोंडरवैन, 1990), 443. [5]न, 306. [6]कोल, 225. [7]जेस्सी ब्राउन पाउंड्स, "एनीवेयर विद जीसस," सोंग्स ऑफ़ फेथ एंड प्रेज़, कॉम्प. एंड एड. ऑल्टन एच. हावर्ड (वेस्ट मुनरो, एलए.: हावर्ड पब्लिशिंग को., 1994)।